International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

दक्षिणी–पूर्वी पंजाब की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति

डॉ. पवन कुमार,
सहायक प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
करनाल डिग्री कॉलेज,
कुन्जपुरा (करनाल)।
मो.नं. 9896586726

सारांशः

आधुनिक हरियाणा प्रान्त 1966 से पूर्व पंजाब प्रान्त का एक भाग था, जिसे दक्षिणी–पूर्वी पंजाब के नाम से जाना जाता है। यह क्षेत्र पंजाब के अन्य भागों की अपेक्षा राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में काफी पिछड़ा हुआ था। आजादी के पश्चात भी पंजाब की सरकार में पंजाबी भाषी लोगों का ही बोलबाला था। पंजाबी क्षेत्र के नेताओं ने कभी भी मन्त्रिमण्डल में हरियाणा क्षेत्र के लोगों को बराबर का प्रतिनिधित्व नहीं दिया। इस क्षेत्र के केवल दो विधायकों को ही कैबिनेट मन्त्री बनाया जाता था। इस क्षेत्र की अधिकतर जनता गाँवों में निवास करती थी और कृषि कार्य पर निर्भर थी। पंजाब की सरकार ने अन्य क्षेत्रों की तरह इस क्षेत्र के आर्थिक विकास की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। इस क्षेत्र में न तो नहरों का विकास किया गया और न ही आधुनिक शिक्षा एवं उद्योगों को बढ़ावा दिया गया। विकास के मामले में पहले पंजाबी क्षेत्र, फिर हरियाणा क्षेत्र यही पंजाब सरकार की नीति रहती थी। परिणामस्वरूप, पंजाब के अन्य क्षेत्रों की तुलना में यह क्षेत्र पिछड़ता ही चला गया।

प्रस्तुत शोध–पत्र ''दक्षिणी–पूर्वी पंजाब की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति'' से संबंधित है। इस शोध–पत्र में पृथक प्रान्त बनने से पूर्व हरियाणा क्षेत्र के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का उल्लेख किया गया है। इसके अलावा, इस शोध–पत्र में 1966 से पहले विकास के क्षेत्र में पंजाबी क्षेत्र और हरियाणा क्षेत्र दोनों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है।

राजनीतिक स्थिति :

30 दिसम्बर, 1803 को दौलतराव सिंधिया को पराजित करने के पश्चात् अंग्रेजों ने 'सर्जीअंजन गांव की सन्धि' के द्वारा वर्तमान हरियाणा के क्षेत्र को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के राज्य में मिला लिया। इस क्षेत्र को बंगाल प्रेजीडेन्सी में शामिल कर दिया गया।[1] इसके पश्चात् कम्पनी की सरकार ने इस क्षेत्र को दो भागों में बांट दियाः प्रथम, 'असाइंड टैरिटरी', जिसमें यमुना नदी के किनारे बसे कुछ क्षेत्र तथा पानीपत, सोनीपत, समालखा, गन्नौर, नुंह, हथीन, सोहना, रेवाड़ी, पलवल, नगीना, फिरोजपुर इत्यादि के क्षेत्र सम्मिलित थे। इस क्षेत्र की प्रशासनिक व्यवस्था के लिए एक 'रेजीडेन्ट' रखा गया, जो गवर्नर–जनरल के अधीन कार्य करता था। दूसरा, शेष बचा हुआ क्षेत्र काफी बड़ा था। इस क्षेत्र को सामंतों एवं सरदारों में विभाजित कर दिया गया, जिन्होंने अंग्रेज–मराठा युद्ध में अंग्रेजों की सहायता की थी।[2]

1819 में हरियाणा क्षेत्र की प्रशासनिक व्यवस्था में परिवर्तन किया गया। रेजीडेन्ट को इस क्षेत्र की राजनीतिक शक्तियां प्रदान की गई, जबकि नागरिक एवं आर्थिक शक्तियां **कलैक्टर** को सौंप दी गई। अब 'असाइंड टैरिटरी' को भी तीन डिविजनों में बांट दिया गया [3]–

1. **उत्तरी डिविजन–** इसमें पानीपत, सोनीपत, रोहतक, हाँसी, हिसार के क्षेत्र सम्मिलित किये गए और

इसका मुख्यालय हिसार में बनाया गया।

2. **केन्द्रीय डिविजन**– इसमें दिल्ली व उसके आस–पास के क्षेत्र शामिल थे। इस डिविजन का मुख्यालय दिल्ली में स्थापित किया गया।

3. **दक्षिणी डिविजन**– इसमें पलवल, होडल, मेवात, रेवाड़ी और गुड़गाँव के क्षेत्र सम्मिलित किये गये । इस डिविजन का मुख्यालय गुड़गाँव में बनाया गया।[4]

1833 में हरियाणा क्षेत्र की प्रशासनिक व्यवस्था में एक और परिवर्तन किया गया। 1833 के चार्टर एक्ट के द्वारा इस क्षेत्र को उत्तर–पश्चिम सीमा प्रान्त के अन्तर्गत दिल्ली डिविजन में सम्मिलित कर दिया गया। प्रशासन की सुविधा के लिए दिल्ली डिविजन को पाँच जिलों में विभाजित किया गया– दिल्ली, रोहतक, पानीपत, हिसार तथा गुड़गाँव। प्रत्येक जिले का शासन–प्रबन्ध मैजिस्ट्रेट–कलैक्टर नामक अधिकारी को सौंपा गया। हरियाणा क्षेत्र की यह प्रशासनिक व्यवस्था 1857 तक चलती रही।[5]

1857 की क्रान्ति के पश्चात् दक्षिणी–पूर्वी पंजाब (हरियाणा) की प्रशासनिक व्यवस्था में पुनः परिवर्तन किया गया। 6 फरवरी, 1858 में हरियाणा क्षेत्र को उत्तर–पश्चिम सीमा प्रान्त (आधुनिक उत्तर–प्रदेश) से पृथक करके पंजाब प्रान्त में मिला दिया गया। कुछ विद्वानों का मत है कि अंग्रेजों ने हरियाणावासियों को सजा देने के लिए ऐसा किया था, क्योंकि जीन्द को छोड़कर इस क्षेत्र के लोगों ने 1857 की क्रान्ति में बढ़–चढ़ कर भाग लिया था।[6] कुछ भी हो ब्रिटिश सरकार का यह निर्णय सही साबित नहीं हुआ। इस व्यवस्था से इस क्षेत्र में अनेक समस्याएं उत्पन्न हो गईं। यह क्षेत्र भाषायी आधार पर दो भागों अर्थात हरियाणवी एवं पंजाबी भाषा में विभाजित हो गया। उत्तर–पश्चिमी पंजाब और दक्षिणी–पूर्वी पंजाब के लोगों की संस्कृति में काफी अन्तर था। इस क्षेत्र की कई परम्पराएं भी शेष पंजाब से मेल नहीं खाती थीं। वैसे भी, पंजाब के लोग हरियाणा क्षेत्र के लोगों को बराबर का दर्जा नहीं देना चाहते थे। विकास के मामले में भी पंजाब की औपनिवेशिक सरकार दोहरी नीति अपनाती रही।[7]

इसके अतिरिक्त, तत्कालीन चीफ कमिश्नर सर जॉन लारेंस ने हरियाणा के क्षेत्र को प्रशासनिक सुविधा के लिए दिल्ली और हिसार नामक दो डिविजनों में बांट दिया। दिल्ली डिविजन में दिल्ली, गुड़गाँव एवं पानीपत जिले सम्मिलित किए गए, जबकि हिसार डिविजन में हिसार, सिरसा, रोहतक और झज्जर रियासत के कुछ भाग सम्मिलित किये गये। इनके मुख्यालय क्रमशः दिल्ली और हिसार में बनाये गये। प्रत्येक डिविजन का प्रशासन कमिश्नर के अधीन रखा गया। कमिश्नर की सहायता के लिए कई छोटे–छोटे अधिकारी नियुक्त किये गये। प्रत्येक जिले की व्यवस्था डिप्टी कमिश्नर को सौंपी गई। हरियाणा में यह प्रशासनिक व्यवस्था 1947 तक अस्तित्व में रही।[8]

आजादी के पश्चात् भी पंजाब सरकार का हरियाणा क्षेत्र के प्रति भेदभाव जारी रहा। 1951–52 में लोकसभा के साथ–साथ पंजाब विधानसभा के लिए भी चुनाव हुए। चुनाव में स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने के पश्चात् कांग्रेस पार्टी ने भीमसेन सच्चर के नेतृत्व में अपनी सरकार का गठन किया। मुख्यमंत्री सच्चर ने अपने 8 सदस्यीय मन्त्रिमण्डल में हरियाणा क्षेत्र से केवल दो विधायकों को ही सम्मिलित किया। लहरी सिंह को सिंचाई एवं बिजली तथा पं. श्रीराम शर्मा को स्थानीय स्वशासन एवं पंचायत मंत्री बनाया गया।[9] पाँच वर्षों के पश्चात् अर्थात् 1957 में पंजाब विधानसभा के लिए फिर से आम चुनाव हुए। इस बार कांग्रेस हाईकमान ने प्रताप सिंह कैरो को पंजाब का नया मुख्यमंत्री बनाया। उसने भी अपने 7 सदस्यीय मन्त्रिमण्डल में हरियाणा क्षेत्र के दो विधायकों– राव बीरेन्द्र सिंह तथा सूरजमल को ही कैबिनेट मन्त्री बनाया।[10] 1962 में तीसरे आम चुनाव के पश्चात् कांग्रेस हाईकमान ने एक बार फिर प्रताप सिंह कैरो को पंजाब का मुख्यमंत्री नियुक्त किया।

अब की बार भी उसने अपने 10 सदस्यीय मन्त्रिमण्डल में हरियाणा क्षेत्र के दो विधायकों– राणबीर सिंह तथा रामसरन चन्द्र मित्तल को ही कैबिनेट मंत्री बनाया।[11]

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि हरियाणा क्षेत्र राजनीतिक क्षेत्र में शेष पंजाब की तुलना में पिछड़ता ही चला गया। इसके लिए मुख्य रूप से पंजाबी क्षेत्र के नेता जिम्मेदार थे। उन्होंने इस क्षेत्र के तीन या चार विधायकों को कभी भी कैबिनेट मन्त्री नहीं बनाया। परिणामस्वरूप, इस क्षेत्र के लोगों ने पृथक हरियाणा प्रान्त के लिए आन्दोलन तेज कर दिया।

सामाजिक स्थिति :

हरियाणा राज्य के निर्माण से पूर्व यहाँ का समाज धर्म एवं जाति के आधार पर बंटा हुआ था। इस क्षेत्र में हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, इसाई, जैन तथा बौद्ध धर्म के लोग निवास करते थे। तालिका (1.1) में हरियाणा क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों की संख्या को उनके धर्मानुसार दर्शाया गया है–

तालिका–1.1

1951 में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोगों की संख्या

क्र. सं.	धर्म	हिसार	रोहतक	गुड़गाँव	करनाल	अम्बाला	कुल
1.	हिन्दू	9,54,714	11,05,046	7,94,019	9,74,959	6,81,477	**45,10,225**
2.	सिक्ख	80,394	7,907	6,310	96,458	2,32,456	**4,23,525**
3.	इस्लाम	3,312	2,562	1,63,663	3,658	23,106	**1,96,301**
4.	जैन	6,609	5,878	2,722	3,813	2,983	**22,005**
5.	ईसाई	609	153	769	490	3,690	**5,711**
6.	बौद्ध	7	–	59	–	8	**74**

स्रोतः **सैन्सस् ऑफ इंडिया, 1951**, वॉल्यूम–VIII, पंजाब, पैप्सू, हिमाचल प्रदेश, बिलासपुर एंड दिल्ली, पार्ट II-A, जनरल पॉपुलेशन ऐज एंड सोशल टेबल, हिमालय प्रैस, शिमला, 1953, पृ. 298–299 ।

उपरोक्त तालिका (1.1) से पता चलता है कि 1951 में हरियाणा क्षेत्र में हिन्दू धर्म को मानने वालों की संख्या 45,10,225 अर्थात् 87.44 प्रतिशत थी, जो सर्वाधिक थी। इसके पश्चात् समाज में सिक्खों की संख्या 4,23,525 (8.21 प्रतिशत) तथा मुसलमानों की संख्या 1,96,301 (3.80 प्रतिशत) थी। जैन धर्म, ईसाई धर्म व बौद्ध धर्म को मानने वाले लोगों की संख्या क्रमशः 22,005, 5,711 और 74 थी। ये हरियाणा की कुल जनसंख्या का 0.53 प्रतिशत थे।[12] इसके अतिरिक्त, हरियाणा का समाज अनेक जातियों व उप–जातियों में बंटा हुआ था। हिन्दू धर्म में ब्राह्मण, बनिया, जाट, वैश्य, अहीर, गुर्जर, राजपूत, बिश्नोई, खाती, रोड़, सैनी, कम्बोज, खत्री, अरोड़ा, कुम्हार, लुहार, चमार, धानक, मेहत्तर इत्यादि जातियां शामिल थीं। मुसलमानों में मेव जाति के लोग सबसे अधिक संख्या में थे। इनमें राघड़, गुर्जर, रंगरेज इत्यादि उप–जातियां भी शामिल थीं। सिक्खों में जाट, सैनी, कम्बोज, खत्री, अरोड़ा, तरखान आदि उप–जातियां शामिल थीं।[13] इस प्रकार हरियाणा राज्य के गठन से पूर्व हरियाणवी समाज विभिन्न जातियों एवं उप–जातियों में विभाजित था। लेकिन यहां विभिन्नता के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक एकता भी देखने को मिलती थी। विवाह, जन्म, मृत्यु इत्यादि के मौकों पर लोग मिलजुल कर रहते थे तथा एक दूसरे के सुख–दुःख में सम्मिलित होते थे। हालांकि, दलितों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था और उन्हें अस्पृश्य माना जाता था।[14]

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

हरियाणा राज्य के गठन से पूर्व इस क्षेत्र में शिक्षा के विकास पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया।[15] निम्नलिखित तालिका (1.2) में 1870-71 में हरियाणा में शिक्षा की स्थिति को दर्शाया गया है-

तालिका-1.2

औपनिवेशिक हरियाणा में स्कूलों की संख्या

क्र.सं.	जिला	क्षेत्रफल वर्गमील में	जनसंख्या	हाई स्कूल	मिडल स्कूल	अंग्रेजी स्कूल	हिन्दी स्कूल
1.	अम्बाला	1,210	4,22,428	9	3	1	4
2.	करनाल	3,146	8,28,726	7	2	3	4
3.	गुड़गाँव	2,217	6,82,003	4	0	5	5
4.	रोहतक	2,246	7,72,272	7	4	6	2
5.	हिसार	5,185	8,16,810	4	1	5	11
	कुल	**14,004**	**35,22,239**	**31**	**10**	**20**	**26**

स्रोतः जगदीश चन्द्र, **फ्रीडम स्ट्रगल इन हरियाणा-1919-1947**, विशाल पब्लिकेशन, कुरुक्षेत्र, 1982, पृ0 6-9 ।

उपर्युक्त तालिका (1.2) का अध्ययन करने से पता चलता है कि औपनिवेशिक काल में हरियाणा क्षेत्र में आधुनिक शिक्षा की स्थिति बहुत खराब थी। उस समय इस क्षेत्र में कुल 87 स्कूल थे, जो लगभग 15-15 मील की दूरी पर स्थित थे। दूसरी ओर, वर्तमान पंजाब में 10 वर्गमील पर एक स्कूल था।[16] सरकार ने 1870 के बाद हरियाणा में शिक्षा की ओर थोड़ा बहुत ध्यान दिया, जिसके परिणामस्वरूप 1900-01 तक अम्बाला जिला में स्कूलों की संख्या 180 तक पहुंच गयी, जिनमें लगभग 9,133 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे। इसी अवधि के दौरान करनाल में स्कूलों की संख्या 203, रोहतक में 98, हिसार में 105 तथा गुड़गाँव जिले में 128 हो गई, जिनमें क्रमशः 5,393, 5,097, 5,085 तथा 5,139 विद्यार्थी पढ़ते थे। लेकिन हरियाणा की जनसंख्या को देखते हुए ये स्कूल बहुत कम थे। इसके अलावा, यहां हिन्दी भाषी स्कूल ज्यादा संख्या में थे। अतः मद्रास, बम्बई, बंगाल की अपेक्षा यहां निरक्षरता की दर अधिक ही बनी रही।[17]

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी हरियाणा की स्थिति असन्तोषजनक ही बनी रही। 1926 तक यहां कोई कॉलेज नहीं खोला गया। 1927 में रोहतक में पहला इंटरमीडिएट कॉलेज खोला गया। इसके पश्चात् भी कॉलेजों की स्थापना की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। भारत की स्वतन्त्रता तक इस क्षेत्र में केवल 6 कॉलेज ही खोले गये। अतः हरियाणा के ज्यादातर विद्यार्थियों को लाहौर एवं दिल्ली के कॉलेजों में पढ़ने के लिए जाना पड़ता था। 1947 तक इस क्षेत्र में एक ही सरकारी कॉलेज खोला गया। कुल मिलाकर शिक्षा के मामले में भी ब्रिटिश एवं पंजाब सरकारें इस क्षेत्र की हमेशा उपेक्षा करती रहं।[18]

आर्थिक स्थिति :

हरियाणा प्राचीन काल से ही एक कृषि प्रधान क्षेत्र रहा है। 1966 से पूर्व यहां की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या अपने जीवन-निर्वाह के लिए कृषि पर निर्भर रहती थी और गांवों में निवास करती थी।[19] गांवों में कृषक तथा गैर-कृषक जातियां निवास करती थीं। गैर-कृषक जातियां 'जजमानी' व्यवस्था के आधार पर कृषक जातियों के साथ जुड़ी हुई थीं। चमार, कुम्हार, जुलाहा, नाई, बढ़ई, सुनार, लुहार, धोबी इत्यादि गैर-कृषक अर्थात् निम्न जातियों से सम्बन्ध रखते थे। वे खाली समय में वस्तुओं का निर्माण करते थे और बुवाई एवं जुताई के समय अपने-अपने 'जजमानों' के खेतों में कृषि के कार्य करते थे। वे अपने काम के बदले 'जजमानी' अथवा 'सिपेदारी' व्यवस्था के अन्तर्गत फसल का एक निश्चित भाग अथवा थोड़ा-बहुत अनाज प्राप्त करते थे।[20]

हरियाणा क्षेत्र में वर्ष में दो फसलें बोई जाती थी- **'रबी'** और **'खरीफ'**, जिन्हें आम भाषा में ***'अषाढ़ी'*** व ***'सावणी'*** कहा जाता था।[21] **अषाढ़ी** (रबी) की फसलें सर्दी के मौसम में अक्तूबर-नवम्बर महीनों के

आस-पास बोई जाती थीं तथा अप्रैल-मई के महीनों में काट ली जाती थीं। इस मौसम की मुख्य फसलें गेहूं, जौ, चना इत्यादि थीं। सरसों, तारमीरा जैसी व्यापारिक फसलें भी इसी समय बोई जाती थीं। गन्ना मार्च के महीने में बोया जाता था तथा नवम्बर से दिसम्बर के महीनों तथा इसके बाद तक काटा जाता था। **'सावणी'** (खरीफ) गर्मी के मौसम में बोई जाने वाली फसलें थीं। ये फसलें वर्षा ऋतु के आरम्भ होते ही बोई जाती थ° तथा सर्दी का मौसम आने तक काट ली जाती थीं। इनमें ज्वार, मक्की, मूंग, मोठ इत्यादि मुख्य फसलें सम्मिलित थीं। सिंचाई वाले क्षेत्रों में धान भी खूब बोया जाता था।[22]

औपनिवेशिक शासन के दौरान हरियाणा क्षेत्र में आधुनिक यातायात एवं संचार के साधनों का विकास किया गया, जिससे कृषि के व्यवसायीकरण को बल मिला। नकदी फसलों की मांग को देखते हुए यहां के बड़े किसानों ने अपने खेतों में गेहूं, कपास, गन्ना, पटसन, तिलहन आदि फसलें बोनी शुरू कर दी। लेकिन नकदी फसलों का लाभ किसानों को अधिक नहीं मिला। भू-राजस्व की बढ़ती हुई मांग, अनाजों की कीमतों में उतार-चढ़ाव, प्राकृतिक आपदा आदि किसानों की कमर तोड़ देती थी।[23] इसके अलावा, ब्रिटिश सरकार नकदी में भूमिकर लेती थी। इसलिए भूमिकर चुकाने के लिए किसानों को मजबूर होकर साहूकारों से ऋण लेना पड़ता था। साहूकार किसानों को ऊँची ब्याज की दर पर ऋण देते थे, जिससे किसानों की दशा दयनीय हो जाती थी। ऋण न चुकाने की स्थिति में किसान को अपनी भूमि का एक टुकड़ा या तो बेचना पड़ता था या गिरवी रखना पड़ता था। उस समय हरियाणा के ज्यादातर किसान ऋणग्रस्त थे।[24]

हरियाणा राज्य के गठन से पहले औद्योगिक क्षेत्र में यह इलाका पिछड़ा हुआ था। कृषि पर आधारित कुछ घरेलू उद्योगों को छोड़कर यहां बड़े उद्योग स्थापित नहीं हुए। इस क्षेत्र में न तो बड़े पूंजीपति विकसित हुए और न ही बड़े बाजार। यहां की जनता हस्तकला उद्योगों पर अधिक निर्भर रही। आधुनिक लोहा एवं कपड़ा जैसे कुछ उद्योगों की स्थापना के लिए उपयुक्त भौगोलिक दशा का प्रतिकूल होना भी यहां के औद्योगिक विकास के मार्ग में बाधा बनी रही। साथ ही, महत्त्वपूर्ण खनिज पदार्थों के अभाव के कारण भी इस क्षेत्र का औद्योगिक विकास बहुत धीमा ही बना रहा। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद सरकार ने उद्योगों को उन्नत करने के लिए कुछ सुविधाएं देने का प्रयास किया।[25] परन्तु पंजाब की तुलना में हरियाणा के उद्योगों की स्थिति दयनीय ही बनी रही। सन् 1964 में हरियाणा क्षेत्र में कुल 1210 पंजीकृत उद्योग थे, जिनमें 66,620 लोग काम करते थे, जबकि पंजाबी क्षेत्र में कुल 3,835 उद्योग पंजीकृत थे, जिनमें 99,477 लोग काम करते थे। इस प्रकार औपनिवेशिक काल में देश के अन्य क्षेत्रों की तुलना में औद्योगिकरण के क्षेत्र में यह इलाका बुरी तरह से पिछड़ा हुआ था। व्यापार की दृष्टि से भी हरियाणा क्षेत्र की स्थिति काफी खराब थी। थोड़े से खाद्यानों एवं कच्चे माल को छोड़कर यहां से कोई भी वस्तु निर्यात नहीं की जाती थी। यहां कपड़ा व अन्य जरूरी वस्तुएं देश के दूसरे भागों से आयात की जाती थीं।[26]

उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि दक्षिणी-पूर्वी पंजाब (हरियाणा) का क्षेत्र राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से काफी पिछड़ा हुआ था। आजादी की पश्चात् भी हरियाणा क्षेत्र की स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हुआ। पंजाबी क्षेत्र के नेताओं का हरियाणा क्षेत्र के साथ भेदभाव जारी रहा। उन्होंने कभी भी इस क्षेत्र के लोगों को बराबर का प्रतिनिधित्व देने की कोशिश नहीं की। इस क्षेत्र के तीन या चार विधायकों को कभी भी कैबिनेट मन्त्री नहीं बनाया गया। इस क्षेत्र की अधिकतर जनता गाँवों में निवास करती थी और परम्परागत आधार पर कृषि के कार्य करती थी। विकास के मामले में पहले पंजाबी क्षेत्र और उसके पश्चात् हरियाणा क्षेत्र यही पंजाब सरकार की नीति रही। न तो यहां पंजाब की तरह नहरों का विकास किया गया और न ही इस क्षेत्र में आधुनिक उद्योगों की स्थापना की गई। इस क्षेत्र में आधुनिक शिक्षा का भी अधिक विकास नहीं किया गया। अतः 1966 तक यहां का समाज जातीय एवं धार्मिक आधार पर सामन्तवादी एवं रूढ़िवादी ही बना रहा।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

[1] **हिन्दुस्तान टाइम्स**, 17 जनवरी, 2010; भीमसेन त्यागी, **दि हिस्ट्री ऑफ हरियाणा**, अरुण पब्लिशिंग हाऊस, चंडीगढ़, 1986, पृ. 41 ।

[2] प्रदमन सिंह एंड एस.पी.शुक्ला (एडिटर्स), **फ्रीडम स्ट्रगल इन हरियाणा एण्ड दि इंडियन नेशनल कांग्रेस (1885-1985)**, हरियाणा प्रदेश कांग्रेस (आई) कमेटी, चंडीगढ़, 1985, पृ. 3-4; बुद्ध प्रकाश, **हरियाणा थ्रू दि एजेज,** कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी प्रैस, कुरुक्षेत्र, 1969, पृ. 87 ।

[3] **फौरेन पोलिटिकल डिपार्टमैंट** प्रोसिडिंग्स, नं. 45, अप्रैल, 1819, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली; चत्तर सिंह, **सोशल एण्ड इकॉनोमिक चेंज इन हरियाणा**, नेशनल बुक ऑर्गेनाइजेशन, नई दिल्ली, पृ. 4 ।

[4] एस.ए.रहमान (चीफ एडिटर), **दि ब्यूटीफुल इंडिया-हरियाणा**, रेफ्रेंस प्रैस, नई दिल्ली, 2006, पृ. 155; एस. सी. मित्तल, **हरियाणाः ए हिस्टोरिकल परस्पैक्टिव**, अटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर, नई दिल्ली, 1986, पृ. 31 ।

[5] पवन कुमार, **हरियाणा में कांग्रेस की राजनीति (1966-2005)**, अप्रकाशित शोध-प्रबंध, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, 2015, पृ. 20 ।

[6] www.haryana.online.com/history/history.htm.; प्रदीप कुमार, 'सब नेशनलिज्म इन इंडियन पोलिटिक्सः फॉरमेशन ऑफ ए हरियाणवी आइडेंटिटी', **दि इंडियन जरनल ऑफ पोलिटिकल साईंस**, वाल्यूम-LII नं.1, पब्लिशड बाईः दि इंडियन पोलिटिकल साईंस एसोसिएशन, जनवरी-मार्च, 1991, पृ. 115

[7] **इम्पीरीयल गजेटियर ऑफ इण्डिया-1907**, वॉल्यूम-III, पृ. 197 ; रणबीर सिंह, 'जेनेसिस एण्ड एक्पोजीशन ऑफ दि डिमांड फॉर विशाल हरियाणा', **कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी रिसर्च जरनल**, (आर्टस् एण्ड ह्यूमनीटीज), वॉल्यूम-II, नं. 1, दिसम्बर-जनवरी, 1968, पृ. 212-213 ।

[8] **भारत सरकार प्रोसिडिंग्स ऑफ दि डिर्पाटमैंट ऑफ होम पब्लिक**, नं. 22, जनवरी, 1847; सुखदेव सिंह चिब, **दिस ब्यूटीफुल इंडिया-हरियाणा**, लाईट एण्ड लाईफ पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1977, पृ. 14 ।

[9] **इंडियाः ए रफ्रेंस अनुवल 1953**, मिनिस्ट्री ऑफ इन्फॉर्मेशन एण्ड ब्रोडकास्टिंग, गवर्नमैंट ऑफ इंडिया, दिल्ली, 1953, पृ. 165-166 ।

[10] **भारत वार्षिक सन्दर्भ ग्रन्थ-1957**, पब्लिकेशन डिवीजन, सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, दिल्ली, 1957, पृ. 243 ।

[11] **इंडियाः ए रफ्रेंस अनुवल 1962,** मिनिस्ट्री ऑफ इन्फॉर्मेशन एण्ड ब्रोडकास्टिंग, गवर्नमैंट ऑफ इंडिया, दिल्ली, 1962, पृ. 456-457 ।

[12] **सैन्सस् ऑफ इंडिया-1951**, वॉल्यूम-VIII, पंजाब पैप्सू, हिमाचल प्रदेश, बिलासपुर एण्ड दिल्ली, पार्ट-II ए जनरल पॉपुलेशन ऐज एण्ड सोशल टेबल, हिमालय प्रैस, शिमला, 1953, पृ. 298-299 ।

[13] डेन्जिल इब्टसन, **पंजाब कास्टस्**, बी.आर. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, दिल्ली, 1974, पृ. 102-103; एस.वाई. कुरैशी, **हरियाणा रैडिसकवर्ड ए बिबलियो ग्राफिकल एरिया स्टडी**, वॉल्यूम-2, इंडियन डॉक्यूमैंटेशन सर्विस, गुड़गाँव, 1985, पृ. 10; शशिभूषण सिंहल, **हमारे देश का राज्य-हरियाणा**, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाऊस, नई दिल्ली, 1972, पृ. 4; के.सी.यादव, 'सोशल इवोल्यूशन इन हरियाणाः ए जरनल सर्वे,' **जरनल ऑफ हरियाणा स्टडीज**, वॉल्यूम-XIII, नं. 1-2, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र, 1981, पृ. 38-39 ।

[14] **सैटलमैंट रिपोर्ट ऑफ रोहतक डिस्ट्रिक्ट-1873-76**, पृ. 26 ।

[15] सी.एल.कुन्डू एंड उदय शंकर (एडिटीड), **ऐजुकेशन इन हरियाणाः रेटरोपैक्ट एण्ड परोस्पैक्ट**, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी प्रैस, कुरुक्षेत्र, 1981, पृ. 9 ।

[16] जगदीश चन्द्र, **फ्रीडम स्ट्रगल इन हरियाणा-1919-1947**, विशाल पब्लिकेशन, कुरुक्षेत्र, 1982, पृ. 6-9 ।

[17] एस.सी. मित्तल, **हरियाणाः ए हिस्टोरिकल परस्पैक्टिव**, अटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, नई दिल्ली, 1986, पृ. 73; के.सी. यादव, 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ दि डिवैल्पमैंट ऑफ ऐजुकेशन इन हरियाणा डयूरिंग दि नाइनटींथ सेन्चुरी', **जरनल ऑफ हरियाणा स्टडीज**, वॉल्यूम-1, नं. 2, जुलाई- दिसम्बर, 1969, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र, पृ. 14 ।

[18] सी.एल.कुन्डू एंड उदय शंकर (एडिटीड), **ऐजुकेशन इन हरियाणाः रेटरोपैक्ट एण्ड परोस्पैक्ट**, पृ. 43; के.सी. यादव, **हरियाणा का इतिहासः आदिकाल से 1966 तक**, होप इंडिया पब्लिकेशंस, गुड़गाँव, 2012, पृ. 515-516

[19] **भारत वार्षिक सन्दर्भ ग्रन्थ-1998**, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाऊस, नई दिल्ली, 1998, पृ. 795 ।

[20] हिमाद्री बनर्जी, 'दि कमीनस् ऑफ पंजाब (1849-1901),' **दि पंजाब पास्ट एण्ड प्रेजेन्ट**, वॉल्यूम-XI, पार्ट-II, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, अक्तूबर, 1977, पृ. 287; हरीश चन्द्र शर्मा, 'कास्ट मोबाइलिटी अमंग दि आर्टिजन कास्ट ऑफ दि पंजाब', **पंजाब हिस्ट्री कान्फ्रेंस**, 13वाँ सैशन, मार्च 2-4, 1979, प्रोसिडिंग्स, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, मार्च, 1980, पृ. 252 ।

[21] **करनाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर-1918**, पृ. 104 ।

[22] **अम्बाला डिस्ट्रिक्ट गजेटियर-1883-84**, पृ. 48-49; जी.एस. छाबड़ा, **सोशल एण्ड इकॉनोमिक हिस्ट्री ऑफ दि पंजाब (1849-1901)**, एस.नागिन एण्ड कम्पनी, जालन्धर, 1962, पृ. 8-12 ।

[23] पवन कुमार, **हरियाणा में कांग्रेस की राजनीति (1966-2005)**, अप्रकाशित शोध-प्रबंध, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, 2015, पृ. 15 ।

[24] **पंजाब लैण्ड रैवन्यू एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट (1869-70)**, पृ. 8; मैल्कम डार्लिंग, **पंजाब पिजेन्ट इन परोस्पीरीटी एण्ड डेट**, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1934, पृ. 6-115; रघुवेन्द्र तंवर, **पोलिटिक्स ऑफ शेयरिंग पॉवरः दि पंजाब यूनियनिस्ट पार्टी (1923-1947)**, मनोहर पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1999, पृ. 69; विस्तार के लिए देखें, चौधरी छोटूराम, **बेचारा किसान** (सम्पादक के.सी. यादव), ऋतु प्रकाशन,हिसार,1978 पृ. 10-11 ।

[25] **सैन्सस् ऑफ इंडिया-1921**, वॉल्यूम-XV, पंजाब एण्ड दिल्ली, पार्ट-1, सिविल एण्ड मिलिट्री गजट प्रैस, लाहौर, 1923, पृ. 375; **रोहतक सैटलमैंट रिपोर्ट-1873-76**, पृ. 8; **करनाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर -1883-84**, पृ. 2; **गुडगाँव डिस्ट्रिक्ट गजेटियर-1915**, पृ. 9; डी.आर. गाडगिल, **दि इण्डस्ट्रियल इवोल्यूशन ऑफ इण्डिया रिसेंट टाइम्स (1860-1939)**, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, नई दिल्ली, 1971, पृ. 47; आर. सी.दत्त, **दि इकॉनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडियाः अरली ब्रिटिश रूल**, वॉल्यूम-1, लो.प्राइस पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1990 पृ. VII ।

[26] **स्टेटीस्टिकल अबस्ट्रक्ट ऑफ पंजाब-1965**, इशुड बाईः दि इकॉनोमिक एण्ड स्टेटीस्टिकल एडवाईजर टु गवर्नमैंट पंजाब, चंडीगढ़, 1966, पृ. 184-185, 234-239 ।